27.6.2020

D.El.Ed. 2nd year (2018-20)

COURSE-S4: स्वयं को समझ

Unit-2: अपनी अस्मिता के प्रति सजगता।

Topic-C: शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका की पहचान तथा इसके चुनौतियों को समझ।
विद्यालय संस्कृति के संदर्भ में।

आज के दौर में परिस्थियाँ काफी बदल चुकी है। बदलती परिस्थितियों में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र तथा साहित्य के में नित नये प्रयोग तथा साहित्य जगत में नित नये परिवर्तन ने शिक्षण क्षेत्र को काफी विशाल बना दिया है। अध्यापक की भूमिका सिर्फ शिक्षण-अभ्यास तक ही नहीं रही बल्कि टीवी, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन पर शिक्षण, दुरस्थ शिक्षा, तकनीकी शिक्षा जैसे संप्रत्ययों से शिक्षक परिचित हो चुके हैं और शिक्षकों ने अपने शिक्षण अभ्यास की सीमा बढ़ा ली है।

पहले की भांति आज का शिक्षण अभ्यास वैसा नहीं रह गया। पहले शिक्षण अभ्यास, किताब, कॉपी, कलम, श्यामपट्ट, खल्ली और डस्टर जैसे संप्रत्ययों से ही होते थे। पहले क्लासरूम की विधिवत व्यवस्था करनी होती थी। परन्तु आज के दौर में अब तकनीकी माध्यम से पढ़ाई हो रही है और इंटरनेट की सुविधा भी है तो बच्चे तथा शिक्षक अपने-अपने घरों से ही इंटरनेट के माध्यम पढ़ते और पढ़ाते हैं। इस तरह से शिक्षक की भूमिका बदल गई है। परन्तु इसके कुछ चुनौतियाँ भी है। जैसे कि इंटरनेट की सुविधा सुदूर इलाके में अभी भी नहीं है।

* इवार सेप पर ग्रुप बनाया जाता है ताकि पठन-पाठन संबंधित सामग्री भेजा सके। परन्तु ग्रुप में अभिभावक का नंबर जुड़ा

होता है। अभिभावक अत्यधिक मैसेज देखकर ग्रूप से (2)
लेफट हो जाते हैं। * बच्चे भी आनलाइन क्लास में आवाज भरकर ऊब जाते हैं।
* ऑनलाइन क्लास करते वक्त नेटवर्क की समस्या।
* एक ही अभिभावक के कई बच्चे और सबका एक ही समय में ऑनलाइन क्लास का टाइमिंग। इससे किसी न किसी बच्चे का क्लास छूट जाता है। अभिभावक भी आर्थिक बाधाओं के चलते कई मोबाइल खरीद नहीं सकते।
* आर्थिक रूप से लाचार अभिभावक अपने बच्चे को अच्छा फोन या कम्प्यूटर नहीं दिला सकते। इस वजह से ऐसे बच्चे आनलाइन एजुकेशन से वंचित रह जाते हैं।
* अभी इंटरनेट पर तमाम तरह की शिक्षण सामग्री उपलब्ध है। जागरूक बच्चे इंटरनेट के माध्यम से ही सामग्री जुटा लेते हैं। ऐसे में शिक्षक की जरूरत गौण हो जाती है। अतः शिक्षकों के सामने यह चुनौती है कि वह खुद की अस्मिता बनाए रखे। इसके लिए शिक्षक को अपनी शिक्षण सामग्री अपने हर छात्र/छात्रा के लिए सुलभ करने की आवश्यकता है। यहाँ पर शिक्षक की कार्यकुशलता काफी मायने रखती है।

विद्यालय के परिप्रेक्ष्य में देखें तो शिक्षक के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। जैसे विद्यालय प्रबंधन — इसके अंतर्गत अनेक कार्य होते हैं जैसे — योजना (planning), संगठन (Organization), प्रशासन (Administration), प्रेरणा (motivation), नियंत्रण (control),

③

अकादमिक कैलेण्डर बनाना कोका-करीकुलम बनाना शिक्षकों का रोस्टर बनाना शिक्षण तथा शिक्षकेतर कार्यक्रम आयोजित करना।

जैसे अभिभावक दिवस मनाना (Parent's Day) ➔

* प्रायः अध्यापक नहीं चाहते कि उनकी कार्य-कुशलता की आलोचना अभिभावक गण करें।

* अभिभावकों के पास उतना समय नहीं होता कि वो अभिभावक दिवस में शामिल हो सकें।

* विद्यालय में अभिलेख पत्र बनाने की क्षमता का अभाव। आसान शब्दों में कहें तो हर एक गतिविधि को लिखित रूप से संग्रहित करना। रिपोर्ट तैयार करना, योजना बनाना आदि-आदि। परन्तु अधिकांश शिक्षक सिर्फ स्कूल आने-जाने और कक्षा में पढ़ाने भर से ही मतलब रखते हैं। अतः कई बार अभिलेख के अभाव में विद्यालय की कार्यकुशलता भी प्रभावित होती है।

विद्यालय में प्रयोगशाला की व्यवस्था करनी होती है। अतः प्रयोगशाला संचालन हेतु रसायनिक पदार्थ, उपकरण आदि की आवश्यकता होती है। जिसके लिए वित्त धन व संसाधन की आवश्यकता होती है। अतः धन व विज्ञान के शिक्षकों की कुशलता के अभाव में प्रयोगशाला ठप्प पड़ जाती है।

अतः अपने विद्यालय संस्कृति के संदर्भ में विभिन्न चुनौतियों का जाना और शिक्षक की भूमिका की पहचान कर सकें।

R/m
रमण कुमार
सहायक प्राध्यापक
एस.के.मिश्रा कॉलेज ऑफ टीचर एजु.
डिलखौड़, परगंगा
PHONE ⇒ 8877439545

एक शिक्षक होने के नाते हमारा परम कर्तव्य है कि बच्चों को ऐसी शिक्षा दें कि वह शुरू से ही अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारण कर सकें, तदनुसार शिक्षा लें। बिना लक्ष्य का जीवन किसी काम का नहीं होता। ठीक वैसे ही जैसे फुटबॉल के खेल में गोलपोस्ट न हो तो ~~खेल~~ फुटबॉल खेला ही नहीं जा सकता।

लक्ष्यहीन जीवन तो जानवर जीते हैं। परन्तु मनुष्य हमेशा लक्ष्य साधता है और अपनी मंजिल पा ही जाता है।

पर-युक्त पक्षी सिर्फ वायुमंडल में ही भ्रमण कर सकते हैं। परन्तु पर-विहीन मनुष्य चाँद और मंगल ग्रह तक अपनी ~~क~~ पहुँच बना चुका है। जलचर जीव एक सीमा तक ही पानी में रह सकते हैं, विचरण कर सकते हैं परन्तु मनुष्य सागर तल तक पहुँच सकता है। आज पूरी धरती सिमट चुकी है। यह इस बात का द्योतक है कि मानव जो चाहे वो कर सकता है, बशर्ते कि लक्ष्य निर्धारण हो और लक्ष्य प्राप्ति हेतु मजबूत इच्छाशक्ति हो।

लक्ष्य निर्धारण अपनी रुचि व योग्यता के हिसाब से होना चाहिए। बच्चों को जिस विषय में रुचि हो उस विषय क्षेत्र में रोजगार के अवसर जरूर बताना चाहिए ताकि बच्चे लक्ष्य निर्धारण कर अपना ~~अध्ययन, शिक्षण, प्रशिक्षण के माध्यम~~ जीवन संवार सकें।

जीवन के कई आयाम होते हैं। इसके कई पहलू होते हैं। भौतिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक। भौतिक का अर्थ शारीरिक संरचना से है, ऐसी संरचना जिसे देखा और छुआ जा सके। इसकी अपनी क्षमता होती है। गति करने की क्षमता, वृद्धि, मसल्स तानने की क्षमता, पोषण, प्रजनन, आदि।

(3)

भौतिक शरीर की एक सीमा होती है। इसका आकार-प्रकार निश्चित होता है। जिसे शरीर में जीवन कहते हैं।

जीवन का दूसरा पहलू है भावनात्मक जीवन। यह भी काफी महत्वपूर्ण है। यह अभौतिक होता है परन्तु भौतिक जीवन से काफी विशाल होता है और ताकतवर भी। यह जीवन की रक्षा, सुरक्षा और संरक्षा के लिए जरूरी होता है। जैसे एक माँ, अपने हाड़-मांस से बच्चे का शरीर बनाती है फिर उसे अपनी ममता की भावना से सींचती रहती है तब तक की उसकी संतति प्राकृतिक रूप से अपना जीवन जीने में सक्षम न हो जाए. एक बीज पौधे को जन्म देने हेतु खुद को कुर्बान कर देती है मिट्टी में मिल जाती है ताकि पौधा एक विशाल पेड़ बन सके. मानव भी भावनात्मक रूप से एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इसी लिए तो समाज का निर्माण होता है।

अतः बच्चों को सद्भावना की शिक्षा प्रारंभिक अवस्था से ही देनी चाहिए। ताकि बच्चे एक बेहतरीन सामाजिक इंसान बन सकें, साथ ही शिक्षकों को उनकी भावनाओं की भी परख करनी चाहिए। मसलन् अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदारी, दयालुता का भाव व सत्य व ज्ञान की राह पर चलने हेतु तटस्थता का भाव।

जीवन का तीसरा व सबसे अहम पहलू है आध्यात्म। आध्यात्म का मतलब घर-बार छोड़ कर योगी बन जाना, मंदिर मस्जिद या गुरुद्वारा तक ही जीवन को समेट लेना। धार्मिक भावना ही आध्यात्म नहीं है। जाने-अनजाने में हर इंसान आध्यात्म रूप से जुड़ा है।

आध्यात्म के अनेक पहलू हैं। जैसे आस्था, विश्वास, भरोसा, खुशी, संतोष आदि। ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ हम हर रोज सोने से पहले अगले दिन की योजना बनाते हैं और पूरे भरोसे सोते हैं कि अगली सुबह जागना ही है। जबकि सोने की क्रिया मरने की क्रियातत्व होती है। यही भरोसा आध्यात्म है। हम अनेक विधि से ईश्वर को याद करते हैं। उनसे याचना करते हैं। उनका गुणगान करते हैं, उनसे शिकायत करते हैं। यह भी आध्यात्म है। अपने आप को अच्छा दिखना, मानना, अपने आप को सबसे बेहतर बनाने की जद्दोजहद करना भी आध्यात्म है। अतः आध्यात्म की सही शिक्षा देना शिक्षक का परम कर्तव्य है। कि आध्यात्म अगर दिशाविहीन हो जाए तो जीवन का विनाश हो सकता है। अतः आध्यात्म की सही शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है।

अतः हमने जाना कि, मानव जीवन जैसा अनमोल जीवन का लक्ष्य निर्धारण, अवश्य होना चाहिए साथ ही साथ अपने जीवन के भौतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक परिपेक्ष्य की सही शिक्षा व ज्ञान काफी महत्वपूर्ण है।

Raman Kumar
Assistant Professor.
L.K.M.C.T.E. DBG.
Dillimore DARBHANGA
PHONE => 8877439545

28.1.2020

D.El.Ed. 2nd year (2018-2020)

COURSE-S4: स्वयं को समझना।

UNIT - 3: अपने कार्यों तथा जीवन उद्देश्यों को समझना।

TOPIC: अपने जीवन लक्ष्यों को विकसित करना तथा उनके भौतिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य को समझना।

प्रकृति ने कई तरह के जीवन तैयार किए हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म, विशाल से विशाल, गतिशील, स्थिर, जलचर, नभचर, थलचर तथा उभयचर। यानि हर जगह जीवन ही जीवन है। प्रकृति के हर हिस्से में जीवन है। हवा-पानी जमीन हर जगह जीव जन्तु हैं। कोई अति सूक्ष्म है तो कोई विशाल है। कोई गतिमान होने की क्षमता रखता है तो कोई ता उम्र स्थिर रह कर अपना जीवन जीता है। जैसे पेड़-पौधे। हर जीवन का अपना महत्व है। सभी जीव जन्तु एक दूसरे के सहयोग से जीवित हैं। इसे विज्ञान की भाषा में खाद्य-शृंखला (food chain) कहते हैं। ~~इन सभी जीवों में मानव जीवन सबसे महत्वपूर्ण है।~~

इन सभी जीव जन्तुओं में मानव जीवन का भी अपना महत्वपूर्ण अस्तित्व है। यह खोजी स्वभाव का जीव पूरे चराचर जीव-जन्तुओं पर अपनी सत्ता कायम रखने में सक्षम है। जबकि जन्म के समय यह काफी निःसहाय होता है। इसके ठीक विपरीत दूसरे जीवजन्तु जल्द ही सक्षम हो जाते हैं। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने-आप को जिंदा रखना जीवटता की पहचान है। ऐसे महत्वपूर्ण जीवन का अर्थ न समझना, जीवन का उद्देश्य न जानना मानव के लिए बेबूझ ही होगी।